दिनांक :- 23-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम वर्ष कला
विषय :- इतिहास प्रतिष्ठा
पत्र :- एक
इकाई :- चतुर्थ
अध्याय :- ऋग्वैदिक काल के स्त्रोत

क्रुमु, गोमती (सिंधु की सहायक नदी गोमल), कुभा, और सुवास्तु (स्वात) पश्चिमी किनारे से सिंधु की सहायक नदी थी। पूर्वी किनारे से सिंधु की सहायक नदियां - वितस्ता (झेलम), अस्किनी (चेनाब, चन्द्रभाग), परूष्णी (रावी इरावती) शतुद्री (सतलज), विपासा (व्यास) विस्त वितस्ता नदी कश्मीर में वेग तथा कश्मीर से बाहर झेलम कहलाती थी। यह पश्चिम की ओर से पंजाब की पहली नदी थी।

विपासा (व्यास) नदी के तट पर ही इन्द्र ने अपना की पराजि

किया था तथा उसके रथ के टुकड़े-टुकड़े कर दिये थे।
इसका उल्लेख दो बार हुआ है। यास्क अर्जीकीय नदी की पहचान विपशा नदी से करते हैं। यह नदी अर्जीक पर्वत से निकलती थी।
परुष्णी का नाम दाशराज्ञ युद्ध से जुड़ा हुआ है। यास्क के अनुसार यह प्राचीन रावी (इरावती) नदी थी। नदी स्तुति में भी परुष्णी नदी का नाम प्राप्त होता है।
असिक्नी का उल्लेख ऋग्वेद के आठवें मंडल में भी सिंधु के साथ मिलता है। इसकी पहचान प्राचीन चेनाब (चन्द्रभागा) नदी से की गई है।
सरस्वती :—
ऋग्वेद में सरस्वती नदी को सबसे पवित्र बताते हुए इसे नदियों की अग्रवती, नदियों की माता, वाणी प्रार्थना एवं कविता की देवी, बुद्धि को तीव्र करने वाली तथा प्रज्ञा एवं संगीत की प्रेरणादायी भी कहा गया है। यह वह शक्तिशाली नदी थी, जो एक जगह दिखती है परंतु दूसरी जगह नहीं दिखती। इसी नदी के तट पर वैदिक ऋचाओं की रचना हुई थी। पञ्चविंश

तथा जैमिनीय उपनिषद में इस नदी के लुप्त होने के स्थान का नाम विनशन बताया गया है।

सप्त सैंधव प्रदेश में सिंधु नदी, पंजाब की पांच नदियाँ एवं सरस्वती नदी शामिल थी। सरस्वती नदी के पश्चात नदी स्तुति में शतुद्री (सतलज) नदी का उल्लेख है।

दृषद्वती :- यह सिंधु समूह की नदी नही थी। यह ब्रह्मावर्त का पूर्वी एवं दक्षिणी किनारा थी।

अपाया:- यह दृषद्वती एवं सरस्वती नदी के बीच बहती थी।

सरयू:- यह गंगा की सहायक नदी थी। ऋग्वेद के अनुसार चित्र या और अर्ना संभवतः यदु एवं तुर्वस के द्वारा सरयू नदी के किनारे ही पराजित किए गए थे। इसकी तीन बार चर्चा है।

यमुना :- यमुना नदी का उल्लेख ऋग्वेद के तीन मंत्रों में प्राप्त होता है। एक मंत्र में इसका उल्लेख अज, शिग्रु व यक्षु के साथ सुदास के युद्ध के संदर्भ में है।

गंगा :- गंगा की चर्चा एक बार की गई है। इसके तट पर काशी की स्थित बताया गया है।

उपरोक्त महत्वपूर्ण नदियों के अतिरिक्त अन्य कुछ नदियों की चर्चा मिलती है जैसे - रस (पंजसिर), अनुमति, अशुनिती, राका (शक्सी) गंगु इत्यादि।

नदी स्तुति में उल्लिखित अंतिम नदी गोमती है जिसकी पहचान सिंधु की सहायक नदी गोमल से की गई है न कि गंगा की सहायक नदी गोमती से।

समुद्र :- ऋग्वेद के दो छन्दों में चार समुद्रों का उल्लेख है :- अपर (अरब सागर) पूर्व सरस्वत तथा शर्यणावत।

भुज्यु की जहाज दुर्घटना वाली कहानी से जलयात्रा पर प्रकाश पड़ता है, साथ ही वैदिक तौल की ईकाई 'मन' एवं बेबिलोन की ईकाई 'मना' से भी समुद्रिक संपर्क की संभावना बनती है, परंतु मान्य मत है कि संभवतः उपरोक्त चारों समुद्रों का उल्लेख

या तो सिंधु नदी के लिए प्रयुक्त हुआ है अथवा विशाल जलराशि का द्योतक है

पर्वत :- ऋग्वेद में अनेक स्थलों पर पर्वत का जिक्र हुआ है। यहाँ हिमालय पर्वत के संदर्भ में हिमवंत शब्द का प्रयोग किया गया है परंतु आर्य विंध्य अथवा सतपुड़ा से परिचित नहीं थे पर्वत की अन्य चोटियों में मूंजवंत, शिलामंत, आर्जीक, शर्यनावत सुषोम आदि की चर्चा है। इनमें शर्यनावत पर्वत कश्मीर घाटी के पास स्थित था।

ऋग्वेद में उल्लेख है कि मूंजवंत पर्वत से सोम आता है। संभवतः पर्वत के लिये इस शब्द का प्रयोग किया गया है।

मरुस्थल :- ऋग्वैदिक काल में मरुस्थल का ज्ञान आर्यों को हो गया था। ऋग्वेद में अनेक जगह मरुस्थल के लिये धन्व शब्द का प्रयोग मिलता है। ऋग्वेद के एक छंद में तीन मरु स्थल की चर्चा की गई है।

Scanned with CamScanner

इस समय लोग मरुस्थल के आर-पार यात्रा भी करते थे

क्योंकि ऋग्वेद में उल्लिखित है कि पर्जन्य ने मरुस्थल को
पार करने योग बनाया ?

क्षेत्र :- प्रारंभिक वैदिक साहित्य में केवल एक क्षेत्र गंधारी की

चर्चा मिलती है। इसकी पहचान आधुनिक पाकिस्तान के रावल

पिंडी तथा पेशावर जिले से की गई है। यह भेड के उत्तम ऊन
के लिए प्रसिद्ध था।

ब्रह्मावर्त क्षेत्र :- कुरुक्षेत्र के आस-पास का क्षेत्र

(i) ब्रह्मर्षि देश : गंगा-यमुना दोआब का क्षेत्र

(ii) मध्य देश :- हिमालय तथा विंध्य के मध्य का क्षेत्र

(iii) आर्यावर्त :- आर्यों का संपूर्ण प्रभाव क्षेत्र (उत्तर वैदिक काल तक का)

आर्य एवं आर्यों का संघर्ष :-

आर्य शब्द जाति का नहीं बल्कि सांस्कृतिक समूह का व्यंजक

है। उन्हें नये क्षेत्रों पर अधिकार करने के लिए निरंतर संघर्ष

करना पड़ा। यह संघर्ष दो प्रकार का था - स्वयं आर्यों के विभिन्न

कबीलों में संघर्ष तथा दस्यु अथवा दासों (गैरिक मृद्भांड

अथवा काले मृद्भांड के प्रयोक्ता) से संघर्ष हुआ।
इस समय अनेक कबीलों की चर्चा ऋग्वेद में मिलती है
जैसे - भरत (ब्रह्मावर्त क्षेत्र), मत्स्य (भरतपुर), अनुस तथा
द्रुह्यु (पंजाब), तुर्वस (दक्षिण पूर्व), यदु (पश्चिम) पुरु
(सरस्वती नदी के पास का क्षेत्र) इन कबीलों के मध्य ज्यादा
क्षेत्र तथा अधिक प्रतिष्ठा हासिल करने के लिये संघर्ष हुआ।
सबसे प्रसिद्ध आर्य कबीलों का संघर्ष दसराज्ञ युद्ध
के रूप में वर्णित है जो परुष्णी (रावी) नदी के तट पर हुआ
था।
इसका कारण भरत जन को विश्वामित्र का सहयोग प्राप्त था
इसी सहयोग के बल पर उसने व्यास एवं शतुद्रु को
जीता, किंतु शीघ्र ही भरतों ने वशिष्ठ को अपना गुरु मान
लिया। अतः क्रुद्ध होकर विश्वामित्र ने भरत जन के विरोधियों को समर्थन दिया। विश्वामित्र का शाब्दिक अर्थ होता है
जन जातियों का मित्र।